Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

तनु धामा
शिक्षा संकाय
(पी–एच०डी० शोधार्थिनी)
स्वामी विवेकानन्द सुभारती, विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रोफेसर (डॉ०) संतोष शर्मा

सारांश

किसी भी शैक्षणिक संस्थान का शैक्षणिक स्तर एवं गुणवत्ता निश्चित रूप से शिक्षकों की क्षमता, कार्यकुशलता, विषय ज्ञान एवं उनकी योग्यता द्वारा निर्धारित होती है। सम्पूर्ण विश्व में शिक्षक का स्थान अत्यंत गरिमापूर्ण तथा प्रतिष्ठित होता है। वर्तमान समय में शिक्षकों द्वारा अपने स्थान की गुणवत्ता एवं प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए अपने मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ आध्यात्मिक बुद्धि को मुख्य रूप सें सुदृढ़ अत्यन्त आवश्यक करना है। प्रतिस्पर्धा के दौर में शिक्षकों को स्वंय के मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक बुद्धि को उच्च स्तर पर स्थिर रखना एक चुनौती जैसा है। विभिन्न कारणों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं व्यवसायिक चुनौतियों के कारण शिक्षक अपने मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक बुद्धि को बनाये रखने में लगातार संघर्षशील रहता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थिनी ने असमानुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा उत्तर प्रदेश के जिला बागपत में माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में से लिंग के आधार पर 500 (242 शिक्षक एवं 258 शिक्षिकाओं) का चयन किया। शोधार्थिनी ने डॉ0 प्रमोद कुमार, मनोविज्ञान विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी चैकलिस्ट (2016) तथा प्रो0 रूकैया जैनुद्दीन एवं अन्जूम अहमद द्वारा निर्मित आध्यात्मिक बुद्धि परीक्षण (2005) का प्रयोग कर एकत्रित आंकड़ों के सांख्यिकीकरण द्वारा ज्ञात किया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य उच्च सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

मुख्य बिंदु– माध्यमिक स्तर, शिक्षक, मानसिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक बुद्धि आदि।

प्रस्तावना

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

केवल शिक्षक ही किसी भी राष्ट्र के भविष्य को आकार देने के लिए जिम्मेदार एवं उत्तरदायी होता हैं। इसके सन्दर्भ में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने शब्दों में बताया कि ''राष्ट्र के भविष्य को कक्षाओं में शिक्षक आकार देने का कार्य करता है''। एक शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली का दिल और आत्मा होता है। विद्यार्थियों को ज्ञान और विषयवस्तु की समझ प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। शिक्षक विद्वानों की परंपरा को विकसित एवं प्रसारित करने के लिए धुरी के समान कार्य करते हैं और अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के दीपक को प्रज्जवलित करने में अपनी भूमिका निभाते हैं। निःसंदेह, अध्यापक किसी भी समाज का एक अभिन्न और सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं। उनका अध्यापन एवं प्रेरणा हमेशा विद्यार्थियों को सीखने की रूचियों एवं रणनीतियों को बढ़ाता है। अध्यापन कार्य का अर्थ केवल विद्यार्थियों को सूचना देना मात्र नहीं है, बल्कि उनके साथ इस तरह से जुड़ाव विकसित करना है जिससे विद्यार्थियों में कौशल और रचनात्मकता को बढ़ावा मिल सके। आत्मा का विकास करने के लिए शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। तकनीकी युग ने शिक्षक के कार्य को अधिक चुनौतीपूर्ण और अत्यधिक मांग वाला पद बना दिया है। शैक्षणिक पहलू की चिंता करने के साथ–साथ आधुनिक अध्यापक की जिम्मेदारी यह भी देखना है कि कक्षा में जो भी गतिविधियाँ हो वो सभी विद्याथियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो। शिक्षण क्रिया में अंतःक्रियात्मकता और उनकी निरंतर संगति अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

किशोरो के सर्वागीण विकास में शिक्षक का स्वयं के मानसिक रूप से जीवित और शारीरिक रूप से सतर्क रहना अत्यन्त आवश्यक होता है। शैक्षणिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक आदि अनेक पक्षों का विकास करने के लिए शिक्षकों के स्वयं में मानसिक रूप से स्वस्थ तथा शारीरिक रूप से सबल होना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षण एक ऐसा व्यवसाय है जो सभी व्यवसायों के लिए मानव को तैयार करने का आधार प्रदान करता है। शिक्षकों के व्यावसायिक गुणों और मानवीय गुणो की उन्नति के शिक्षक को पूर्ण ईमानदारी से स्वयं को समर्पित करना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र के शैक्षिक संरचना की महत्वपूर्ण कड़ी है। इस स्तर पर विद्यार्थी जीवन के उच्च ऊर्जा स्तर की सर्वोच्य सीमा पर होता है वही विद्यार्थी एक नवीन आदर्शवादी विचारधारा से प्रभावित होता है। इस अवस्था के विद्यार्थी किशोरावस्था (13 से 18 वर्ष) की श्रेणी में आते है। वे सम्पूर्ण संसार का पुनर्निर्माण अपनी इच्छानुसार विकसित करना चाहते हैं। विद्यार्थी अपने भविष्य के लिए अनेक कल्पनाये एवं सपने

बुनते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन तथा मार्गदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

नई शिक्षा नीति 2020 का निर्माण करने का मुख्य उद्देश्य भारत को पुनः विश्वगुरू की उपाधि दिलवाना है। जिसके लिए विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास का होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने शब्दों में बताया कि हमें एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, आध्यात्मिक बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। वहीं रविन्द्र नाथ टैगोर ने बताया कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिससे सोचने की शक्ति बढ़ सके, मानसिक शक्ति का विकास हो साथ ही कल्पना एवं विचार को शक्ति में वृद्धि हो सके जिससे जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता स्वयं विकसित हो। भारत आने वाले दशक में विश्व की सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश बनेगा। इन सभी युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से ही सम्भव है जिसमें विद्यार्थी वैश्विक परिदृश्य में होने वाले तेजी में परिवर्तन के कारण लगातार सीखने की कला तो सीखें साथ ही वे अपनी प्राचीन नैतिकता एवं संस्कृति को सुरक्षित रखने में सक्षम हो सके। इसलिए वर्तमान शिक्षकों में मानसिक रूप से स्वस्थ, आध्यात्मिक रूप से बौद्विक विकास आवश्यक रूप से विकसित करना चाहिए।

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का मानसिक रूप से स्वस्थ होना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि जब तक चिकित्सक स्वस्थ नही होगा तब तक वह अपने मरीजों का उचित प्रकार से देख–रेख तथा इलाज नही कर सकता है। ठीक इसी प्रकार अगर शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ है, तभी उनमें संवेगात्मक रूप से स्थिरता, समायोजन करने की क्षमता, बौद्धिक क्षमता, आत्म स्वं की भावना होगी। जिससे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के संवेगो को समझने में सक्षम हो सके तथा उनके अनुरूप उन्हें मार्गदर्शित कर सके। अध्यापकों में सामाजिक प्रतिष्ठा, मनोवैज्ञानिक परिवेश, वर्तमान समस्याओं के प्रति उनकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए। शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहना न केवल उनके अपने हित के लिए आवश्यक है अपितु विद्यार्थियों की सर्वांगीण उन्नति के लिए भी सर्वश्रेष्ठ साधन है।

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही एक सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक चिंता, तनाव एवं संघर्ष से रहित, सहनशील, उच्च निर्णायक, संतुलित आत्म मूल्यांकन करने वाला, सुसमायोजित होता है। शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ ही उनको अध्यात्मिक बुद्धि में भी उच्च स्तर का होना महत्वपूर्ण होता है जिससे वे विद्यार्थियों में मानसिक

स्वास्थ्य के साथ उनकों सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों तथा सिद्धान्तों का पालन करने के लिए व्यवहारिकता प्रदान कर सके। सिंह (2013) ने अपनी पुस्तक *"प्रैक्टिसिंग स्प्रीचुअल इन्टैलीजेन्सी फॉर इनोवेशन, लीडरशिप एण्ड. हैप्पीनेस"* में वर्णित किया है कि विकसित मस्तिष्क और एक भेद करने वाली बुद्धि विशेष रुप से सम्पन्न मानव को प्रकृति का वो जुडवा उपहार है, जिसका उपयोग कर मानव ब्रह्माण्ड. के रहस्यों का पता लगाने की लगातार कोशिश कर रहा है। जिसमें आध्यात्मिक बुद्धि या "भीतर की आवाज" महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माइकल जॉर्ज (2006) ने ''कार्य स्थल पर आध्यात्मिक बुद्धि लाना" नामक अपने लेख में विवरण दिया है कि प्रबन्ध को बेहतर और नेतृत्व को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इस परिवेश में एक नवीन और गहरी बुद्धिमता की आवश्यकता है। खलील जिब्रान के शब्दों में "काम दिखाई देने वाला प्यार है, वह दूरदर्शिता है।" एक समय था जब आध्यात्मिकता व्यवसाय के रूप में जानी जाती थी। आध्यात्मिक बुद्धि किसी भी कार्यस्थल पर अपना रास्ता खोज लेती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (2018) ने स्वास्थ्य को भौतिक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिकता अच्छे अस्तित्व के रूप में परिभाषित किया है। इसका अर्थ है कि आध्यात्मिक बुद्धि शिक्षा की नींव से निकट से सम्बन्धित है। अतः आवश्यकता है कि आध्यात्मिक बुद्धि को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। आध्यात्मिक बुद्धि के कोर मूल्यों में संयुक्तता, करूणा, ईमानदारी, जिम्मेदारी, सम्मान, एकता, सेवा आदि को शामिल किया गया है। इन स्वाभाविक मूल्यों में पाठ्यचर्या स्वाभाविक अभिव्यक्ति पा सकती है।

अध्ययन की आवश्यकता

लगातार तेजी से बदलते परिवेश, खान–पान, सोशल मीडिया के प्रयोग सें मनुष्य दिन प्रतिदिन भौतिकवादी विचारधारा वाला होता चला जा रहा है। फलस्वरुप मानव का चारो ओर का वातावरण भी अभौतिकता (सांस्कृतिक एवं सामाजिकता) से भौतिकता की ओर अग्रसरित है। इस तेजी से होते बदलाव के कारण सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप में विभिन्न प्रकार की नयी–नयी समस्याएं होनी प्रारम्भ हो गयी हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति के सामने विभिन्न प्रकार की समस्याएं एवं बाधाएं आवश्यकता से अधिक है। इसके पीछे का कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा और मानव जीवन का अत्याधिक गतिशील और जटिल होना यही कारण है। मानव का शारीरिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य हमेशा इन कारकों द्वारा नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। कोई एक कारक अनेकों नकारात्मक प्रभाव मानव जीवन का में उत्पन्न करता है और एक साथ अनेक कारक मिलकर अनेक नकारात्मक प्रभाव की उत्पत्ति करने में सक्षम होते है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आधुनिकता तथा भौतिकता में शिक्षकों को अनेक प्रकार से नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इस आपाधापी में सीखने सिखाने के प्रति शिक्षकों में रूचि एवं संतोष की लगातार कमी होती जा रही है। शिक्षक का अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार, निष्ठावान तथा जीवन के प्रति संतुष्ट, मानसिक रूप से स्वस्थ एवं आध्यात्मिक रूप से सबल होना अत्यन्त आवश्यक है। जो शिक्षक इन गुणों से युक्त होता है वहीं शिक्षक विद्यार्थियों के बीच एक स्वीकृत व्यक्तित्व माना जाता है। शिक्षकों को जीवन में सच्ची खुशी तभी मिलती है जब वे पूर्ण रूप से संतुष्ट होते हैं। वर्तमान शैक्षिक जगत में शिक्षकों का मानसिक रूप से स्वस्थ एवं आध्यात्मिक रूप से सबल होना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

समस्या कथन–

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण –

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक – प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक स्तर पर संचालित हाईस्कूल बोर्ड की कक्षाओं में अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से सम्बन्धित है।

मानसिक स्वास्थ्य–

मानसिक स्वास्थ्य से आशय मन तथा मस्तिष्क की अपनी पूरी क्षमता के साथ सकारात्मक ढंग से कार्य करने की स्थिति से है। मन के अंदर शांति हो तथा दूसरों के प्रति सद्भावना हों। जिससे वह दूसरों के साथ सम्यक सद्भावपूर्ण संबंध स्थापित कर लेता है तथा अपनी सहभागिता प्रदान करता है।

आध्यात्मिक बुद्धि – प्रस्तुत शोधकार्य में आध्यात्मिक बुद्धि, वह बुद्धि है जो आध्यात्मिक बौद्धिता को जन्म देती है। आध्यात्मिक बुद्धि का अर्थ मात्र धर्म से ओतप्रोत होना नहीं है। यह मानव मन, मस्तिष्क तथा आत्मा की आंतरिक तथा अंतरंग योग्यता और क्षमता है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

शर्मा तथा सोमपुरा (2019) ने स्नातक छात्राओं की स्वजागरूकता, मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया। पिल्ले एवं मिश्रा (2018) ने बताया कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कांडपाल एवं विनीता (2022) ने मानसिक स्वास्थ्य (आयामों) तथा आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सामान्य कोटि का

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

सह–सम्बन्ध पाया। गौड़ (2022) के अनुसार महिलाओं की तुलना में पुरूषों का मानसिक स्वास्थ्य अधिक सकारात्मक पाया गया तथा वैवाहिक स्थिति के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य में अंतर पाया गया। तिवारी एवं मिश्र (2021) के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–सम्बन्ध और उच्च एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया। कुमार अशोक (2020) ने बताया कि मानसिक स्वस्थ होने पर शिक्षकों में अकादमिक तनाव कम होता है यही कारण है कि उनमें शिक्षण करने की प्रभावशीलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सांघवी एम0 (2019) ने बताया कि धार्मिक अभिरूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। सिंह, दिनेश (2019) के शोध निष्कर्षो से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक (सकारात्मक) सह–सम्बन्ध है।

शोध उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं का उनके क्षेत्र के आधार पर उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के साथ सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के जिला बागपत में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से सम्बन्धित है।

अनुसंधान विधि एवं प्रविधि

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

अनुसंधान विधि– प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या– शोधकार्य में उत्तर प्रदेश के जिला बागपत में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं शोध जनसंख्या से सम्बन्धित है।

न्यादर्श विधि एवं न्यादर्शन– प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थिनी ने असमानुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा जिला बागपत में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में से लिंग के आधार पर 500 (242 शिक्षक एवं 258 शिक्षिकाओं) का चयन किया।

शोध चर– प्रस्तुत शोध पत्र में मानसिक स्वास्थ्य व आध्यात्मिक बुद्धि को स्वतन्त्र चर एवं क्षेत्र को आश्रित चर के रूप मे निर्धारित किया।

शोध उपकरण– निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधार्थिनी ने प्रो0 प्रमोद कुमार द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी (2005) तथा प्रो0 रूकैया जैनुद्दीन एवं अन्जूम अहमद द्वारा निर्मित आध्यात्मिक बुद्धि परीक्षण (2005) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीकरण– प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीकरण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सह–सम्बन्ध का प्रयोग किया।

सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

शून्य परिकल्पना 1 माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या 1

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण का विवरण।

चर	क्षेत्र	कुल शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	सार्थकता
मानसिक स्वास्थ्य	शहरी क्षेत्र	236	14.60	4.143	10.901	सार्थक है। 0.05 स्तर पर
	ग्रामीण क्षेत्र	264	20.03	6.572		

** 0.01 सार्थकता स्तर (2.58) *0.05 सार्थकता स्तर (1.96)

तालिका संख्या 1 से अवलोकित होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी परीक्षण (क्रान्तिक अनुपात) की गणना की गयी है। जिसमें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों एवं

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

मानक विचलनों की गणना कर क्रमशः 14.60, 20.03 एवं 4.143, 6.572 प्राप्त किया गया है। दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी का गणनात्मक मान 10.901 प्राप्त हुआ है। टी का गणनात्मक मान सार्थकता स्तर 0.05 (स्वतन्त्रता स्तर = 498) पर तालिका मान से अधिक पाया गया है, जो सार्थक है। अतः दोनों क्षेत्रों के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है।

उपरोक्त सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों क्षेत्रों के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर है, अतः पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना को निरस्त किया गया है। शोध निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में समानता नही है। क्षेत्र के आधार पर शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में प्राप्त होने वाले अन्तर के अनेक सम्भावित कारण हो सकते है।

आरेख संख्या 1

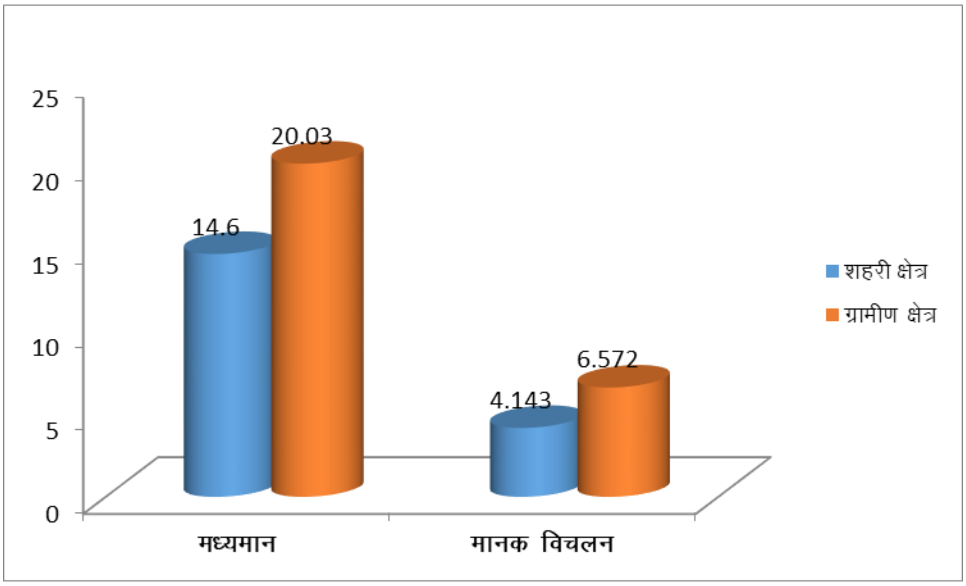

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान, मानक विचलन का आरेखीय विवरण।

आरेख संख्या 1 से प्रदर्शित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की अपेक्षा मानसिक स्वास्थ्य का स्तर अधिक पाया गयी है। शून्य परिकल्पना 2 माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अध्यात्मिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या 2

माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अध्यात्मिक बुद्धि के मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण का तालिकाबद्ध विवरण।

चर	क्षेत्र	शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	सार्थकता
अध्यात्मिक बुद्धि	शहरी क्षेत्र	236	225.02	25.208	9.794	सार्थक है। 0.05 स्तर पर
	ग्रामीण क्षेत्र	264	254.02	38.748		

** 0.01 सार्थकता स्तर (2.58) *0.05 सार्थकता स्तर (1.96)

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना कर क्रमशः 225.02, 25.208 एवं 254.02, 38.748 प्राप्त किया गया है। दोनों क्षेत्रों के शिक्षक और शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी का गणनात्मक मान 9.794 प्राप्त हुआ है। टी का गणनात्मक मान सार्थकता स्तर 0.05 (स्वतन्त्रता स्तर = 498) पर तालिका मान से अधिक पाया गया है, जो सार्थक है। अतः दोनों क्षेत्रों के शिक्षक और शिक्षिकाओं की अध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है।

उपरोक्त सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों क्षेत्रों के शिक्षक और शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर है, अतः पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना को निरस्त किया गया है। शोध निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि में समानता नही है। क्षेत्र के आधार पर शिक्षक और शिक्षिकाओं की अध्यात्मिक बुद्धि में प्राप्त होने वाले अन्तर के अनेक सम्भावित कारण हो सकते है।

आरेख संख्या – 2

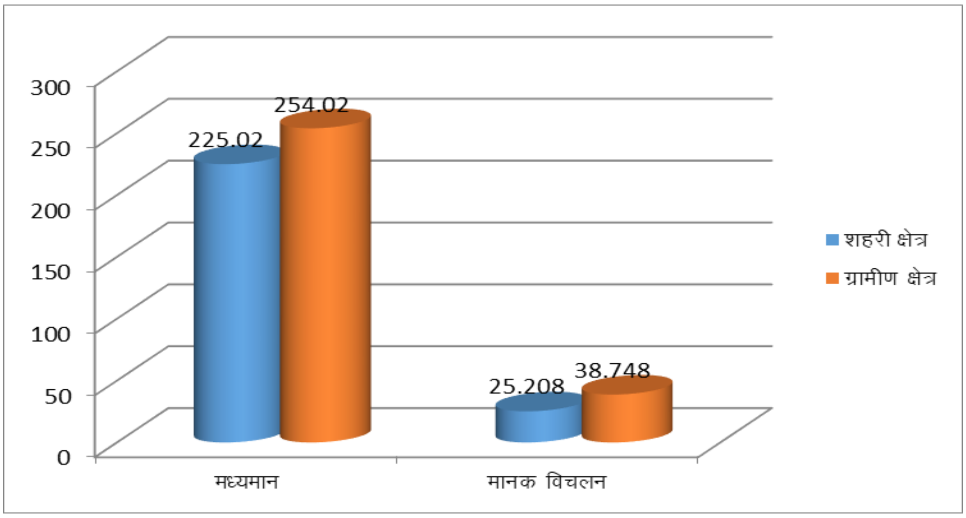

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अध्यात्मिक बुद्धि के मध्यमान एवं मानक विचलन का आरेखीय विवरण।

आरेख संख्या 2 में मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की आध्यामिक बुद्धि का स्तर अधिक पाया गया है।

शून्य परिकल्पना संख्या 3 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव में मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 3

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के निम्न एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य का उनके आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाप के लिए मध्यमान, मानक विचलन का विवरण।

चर	क्षेत्र	शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	सार्थकता
अध्यात्मिक बुद्धि	निम्न मानसिक स्वास्थ्य	181	217.95	26.73	16.16	सार्थक है। 0.05 स्तर पर
	उच्च मानसिक स्वास्थ्य	116	276	35.75		

** 0.01 सार्थकता स्तर (2.58) *0.05 सार्थकता स्तर (1.96)

तालिका संख्या 3 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक और शिक्षिकाओं के निम्न एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना कर क्रमशः 217. 93, 26.73 एवं 276, 35.75 प्राप्त किया गया है। निम्न एवं उच्च मानसिक स्तर के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी का गणनात्मक मान 16.67 प्राप्त हुआ है। टी का गणनात्मक मान सार्थकता स्तर 0.05 (स्वतन्त्रता स्तर = 498) पर तालिका मान से अधिक पाया गया है, जो सार्थक है। अतः दोनों निम्न एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले शिक्षक और शिक्षिकाओं की अध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है।

उपरोक्त सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि निम्न एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले शिक्षक और शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर है, अतः पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना को निरस्त किया गया है। शोध निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि निम्न एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले शिक्षक और शिक्षिकाओं की

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आध्यात्मिक बुद्धि में समानता नही है। शोध निर्देशिका के आधार पर कहा जा सकता है कि जिन शिक्षकों में निम्न मानसिक स्वास्थ्य पाया गया उनका आध्यात्मिक बुद्धि स्तर भी निम्न पाया गया तथा जिसमें मानसिक स्वास्थ्य का स्तर उच्च पाया गया उनका आध्यात्मिक बुद्धि का स्तर भी अधिक पाया गया।

आरेख संख्या 3

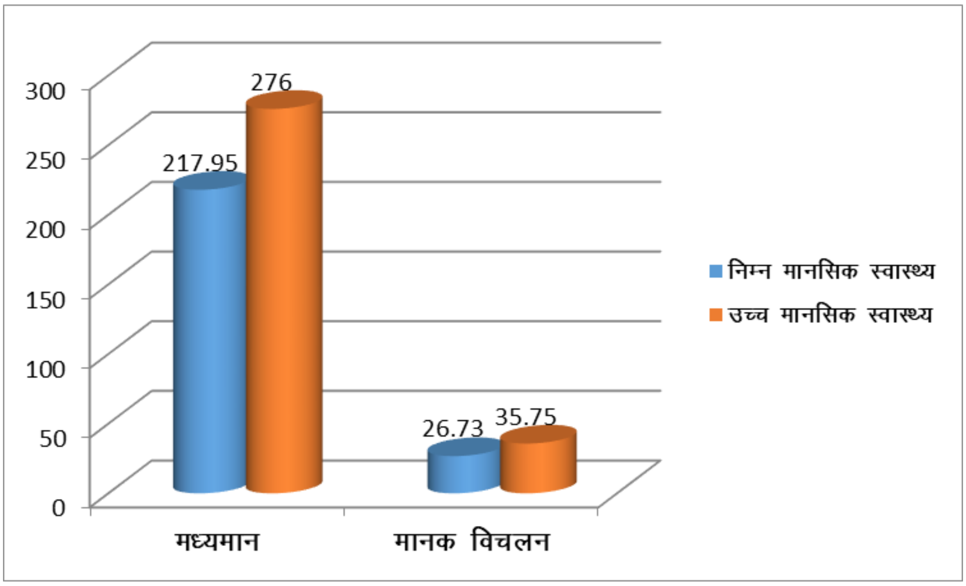

आरेख संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि निम्न मानसिक स्वास्थ्य एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि में अन्तर है।

शून्य परिकल्पना 4 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि के साथ कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध का विवरण।

चर	मध्यमान	मानक विचलन	कुल शिक्षक	आर मान	पी मान	सार्थकता
अध्यात्मिक बुद्धि	240.33	36.064	500	0.632**	.000	सार्थक है। 0.05 स्तर पर
मानसिक स्वास्थ्य	16.29	7.532	500			

** 0.01 सार्थकता स्तर *0.05 सार्थकता स्तर

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञातव्य होता है, कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्राप्तांकों की गणना करने से प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 240.33, 36.064 एवं 16.29, 7.532 हुआ है। शिक्षक एवं

Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

शिक्षिकाओं के आध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध का गणनात्मक मान r (498) 0.632, (पी मान 0.00) जो सार्थकता स्तर 0.05 के तालिका मान से अधिक है। अतः शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया है।

उपरोक्त सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की आध्यात्मिक बुद्धि का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नही है", जो सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की अध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सकारात्मक सह–सम्बन्ध है।

आरेख संख्या– 4.11

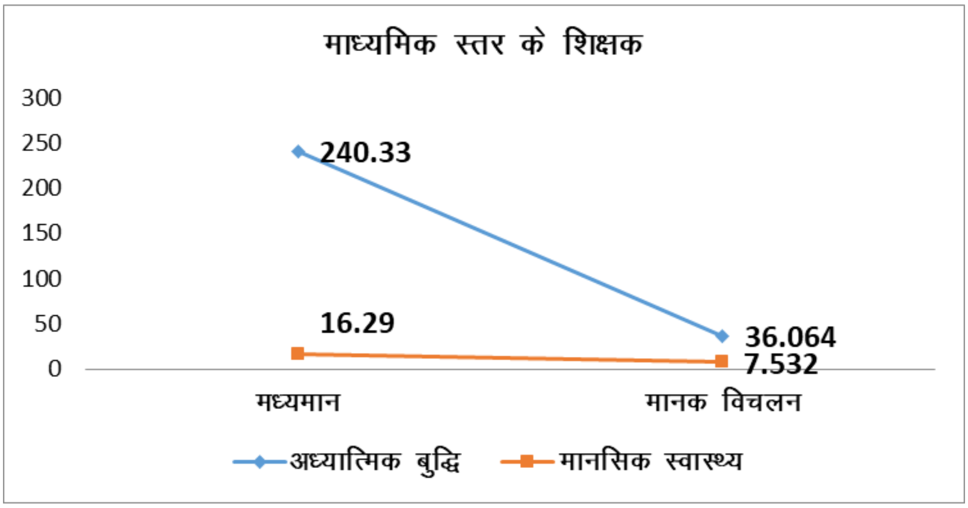

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के अध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान एवं मानक विचलन का आरेखीय विवरण।

आरेख संख्या 4 में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों के मध्य सह–सम्बन्ध पाया गया है।

निष्कर्ष एवं परिणाम

उपरोक्त निष्कर्ष से प्राप्त है, कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में सार्थक अन्तर है। जिसका स्पष्टीकरण कुमार अशोक (2015) एवं मोहसिन (2018) के शोध निष्कर्षो की पुष्टि करता है। वही शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक और शिक्षिकाओं की अध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अन्तर है, सिन्हा (2013) एवं सोलेमन (2012) से प्राप्त शोध परिणाम उक्त शोध निष्कर्षो की पुष्टि करते है। शिक्षकों के

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

मानसिक स्वास्थ्य का उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा निम्न एवं उच्च स्तरीय मानसिक स्वास्थ्य का सीधा प्रभाव उनकी आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ता है। सहसम्बन्ध के आधार पर प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं अध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सकारात्मक सहसम्बध ज्ञात हुआ है। मोलिनी (2010), कांडपाल एवं विनिता (2022) से प्राप्त शोध निष्कर्ष उक्त प्राप्त सहसम्बन्ध की पुष्टि करते है।

शैक्षणिक सुझाव–

उक्त निर्धारित शून्य परिकल्पना के सांख्यिकीकरण एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यक्षेत्र के आधार पर भी उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक बुद्धि के मध्य सकारात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करने में शिक्षकों का अगर मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है तो निश्चित ही उनकी आध्यात्मिक बुद्धि भी सकारात्मक होगी। मानसिक रूप से स्वस्थ एवं आध्यात्मिक बुद्धि से पूर्ण शिक्षक द्वारा कराये गये शैक्षणिक कार्य से विद्यार्थियों में भी मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक बुद्धि जैसे गुणों को विकसित करने में सफल होगे। शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के प्रशिक्षण में विभिन्न शिक्षण कौशलों के साथ शिक्षको को अपने मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक बुद्धि को सबल करने वाले कौशलों का भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एस0 पी0 गुप्ता एवं अलका गुप्ता, (2014) "उद्धृत उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान", प्रकाशक : *शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,* संस्करण, 375।

शर्मा (2012), "सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की महिला शिक्षकों में जीवन संतुष्टि का अध्ययन" *International Research Results, International Indexed & Referred Research Journal*, Vol. I, ISSUE - 1 Oct., 2012, PP-48-49

शर्मा, ब्रहमदत्त (2017), "प्रारम्भिक शिक्षा के भावी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृति, वचनबद्धता तथा जीवन संन्तुष्टि का अध्ययन", *एन इन्टरनेश्नल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स, आर्ट और साइंस,* आई एस बी0 एन0 2319–9202, वोल्यूम 8 इश्यू 12।

मीणा, रामस्वरूप (2012), एम.एड. शोध कार्य, आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, सरदार शहर, चूरू राजस्थान।

मोहन्ता एवं अग्रवाल (2013) "विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि पर सामाजिक सहायता का प्रभाव" *International Research Results, International Indexed & Referred Research Journal*, Vol. I ISSUE - 1 Oct., 2012, PP-48-49

मुर्डिया, सुनिता (2011) ''सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता एवं आध्यात्मिक बुद्धि में सह–सम्बन्ध का अध्ययन'', *लोकमान्य शिक्षक पत्रिका,* इश्यू 38, वर्ष–2011, पृ. सं. 54–59।

मुर्डिया, सुनिता (2011) ''सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता एवं आध्यात्मिक बुद्धि में सह–सम्बन्ध का अध्ययन'', *लोकमान्य शिक्षक पत्रिका,* इश्यू 38, वर्ष–2011, पृ. सं. 54–59।

शिवानी, ब्रह्मकुमारी, (2012) ''वॉट इज स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस'' times of india. India times com life style what is spiritual intelligence article show 5343214.

पिल्ले एवं मिश्रा (2018) "उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन", *इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड हयुमनिटिस,* वोल्यूम 7 आईएसएसएन 2231–38010।

सिंह एवं यादव (2018) "सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन", *आईजेएसआरएसईटी जर्नल,* वोल्यूम 4 इश्यू 6 आईएसएसएन 248–253।

सिंह, एम.पी. एवं ज्योत्सना सिन्हा (2013), "इम्पेक्ट ऑफ स्प्रीचुअल इन्टेलीजेन्सी आन क्वालिटी ऑफ लाइफ डिपार्टमेंट ऑफ ह्यूमॅनिटिज इलाबाद यूनिवर्सिटी", *इन्टरनेशनल जरनल ऑफ पब्लिकेशन* वोल्यूम 3 इश्यू 1. www.ijsrp.org/research-paper-0513/ijsrp-p1705

सिंह, टी. एण्ड सिंह, ए. (2012) ''रिलेशनशिप विटविन कॉगनेटिव, इमोशनल एण्ड स्प्रिचुअल इण्टेलीजेन्सी रोल ऑफ जेण्डर'', एडूट्रेक, अक्टूबर 2012, वॉल्यूम 12, नं. 2, पेज 41–44।

शर्मा आर० ए०,(2009) "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", *आर लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण,* पृ. 154।

शर्मा, आशा (2010) ''उच्च शिक्षा एवं आध्यात्मिक प्रदर्शन'', *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,* वॉल्यूम 29, नं. 1, जनवरी–जून, पेज– 54–63

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

फराह, फातिका एवं अन्य (2013) "कुसमायोजन, जीवन संतुष्टि और आशावादिता : एक सम्बन्धात्मक अध्ययन" *International Journal of Information And Education Technology*, Vol. 4, No. 3, June 2015, Pp-270- 284

जे0 एस0 वालिया, (2009) उद्धृत शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें, *अहम् पाल पब्लिकेशन,* पंजाब, संस्करण, 397।

जैन, मधु तथा पुरोहित प्रेमा (2009) ''स्प्रिचुअल इन्टेलीजेन्सी : ए कन्टेम्प्रेरेरी कर्न्सन विथ रिगार्ड टू लिविंग स्टेट्स ऑफ दी सीनियर सीटिजन'', शोध प्रबन्ध यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, जयपुर।